अलंकार

अलम् + कृ + घञ् । अण् (अ)

कर्ता अर्थ में -

अलङ्करोति इति अलङ्कारः ।

साधन/करण अर्थ में -

अलङ्क्रियते अनेनेति अलङ्कारः ।

भाव अर्थ में -

अलङ्करणम् इति अलङ्कारः

भेद :- 3

① शब्दालंकार ② अर्थालंकार ③ उभयालंकार

शब्दालंकार - शब्दवृत्ति असहत्वम्

अनुप्रास, यमक, श्लेष

विमलेश पूनियाँ

अर्थालंकार -

उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, दीपक, स्वभावोक्ति, व्यतिरेक

उभयालंकारः -

श्लेष, संकर, संसृष्टि

① अनुप्रास -

अनुकरण प्रकृष्ट करके बिछा देना (अनु + प्र + आस)

लक्षण - वर्ण साम्यम् अनुप्रासः

एको देवः केशवो वा शिवो वा, ह्येकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा ।

एको वासः पत्तने वा वने वा, एक नारी सुन्दरी वा दरी वा ।

② यमक - जोड़ा, युगल, युग्म

लक्षण - सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहते। क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते ।

उदाहरण - नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपंकजम्

Notes ② रमते न मरालस्य मानसं मानसं बिना ।

शिशुपाल वध :- नये-नये पत्तों वाले ढाक के वन सामने दिखाई दे रहे हैं, जिनके रजकण (कमल के) निकल आये हैं ।

③ श्लेष - इसमें अनेकार्थ शब्द होते हैं।
अर्थ - चिपकना
लक्षण - श्लिष्टैः पदैः अनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।
श्लिष्ट पदों के कारण/द्वारा अनेक अर्थों का कथन होने पर श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :- (यमक श्लेष में अन्तर)
सर्वस्व हर सर्वस्य
यमक → माघेनेव च माघेन कम्पः कस्य न जायते।
जिसप्रकार माघ माह की सर्दी से सब काँप जाते हैं वैसे ही माघ के शब्दों से सभी काँप जाते हैं।
प्रथम उदाहरण में एक पंक्ति के अलग-2 अर्थ निकल रहे हैं दूसरे में माघ शब्द दो बार आने पर अलग-2 अर्थ लिया है।

श्लेष के अन्य उदाहरण :-
चेतो न लङ्कामयते मदीयम् - मेरा मन लंका की तरफ नहीं जाता है।
चेतोनलं कामयते मदीयम् - मेरा मन जल राजा की कामना करता है।
चेतः अनलं कामयते मदीयम् - मेरा मन अग्नि (कामदेव) की कामना करता है।

④
उपमा - तुलना
पहचान - सम, समान, तुल्य, इव, यथा, सदृश
लक्षण :-
प्रस्फुटं सुन्दरं साम्यमुपमेत्यभिधीयते।
स्पष्ट तथा सुन्दर समानता को उपमा कहा जाता है।
उदाहरण - वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये,
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।

Notes
→ रघुवंश मंगलाचरण - शब्द और अर्थ आपस में गुथे हुए हैं, शब्द व अर्थ लिखने के लिए (काव्य) वागर्थ के समान जगत के माता-पिता (शिव-पार्वती) को मैं प्रणाम करता हूँ।

Scanned with CamScanner

⑤ रूपक - आरोप

लक्षण - तद्रूपकमभेदो यः उपमानोपमेययोः।

उदाहरण -

साहित्य संगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥

उपमेय - प्रस्तुत - प्रकृत - प्रकट - विषय - वर्ण्य विषय

उपमान - अप्रस्तुत - अप्रकृत - अप्रकट - विषयी - समेन - परात्मना

विमलेश पुरिया

⑥ उत्प्रेक्षा :- सम्भावना अलंकार

लक्षण - भवेत्संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।

पहचान - नूनम्, प्रायः, ध्रुवम्, मन्ये, शङ्के, इव

उदाहरण - लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
अंधकार जैसे शरीर को लेप रहा है आकाश काजल/अंजन बरसा रहा है।

⑦ अर्थान्तरन्यास - अर्थ को समझाने के लिए दूसरी बात का सहारा लिया जाये (सूक्ति/सुभाषित)

लक्षण :-

भवेदर्थान्तरन्यासोऽनुक्तार्थान्तराभिधा।

उदाहरण :-

बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति।
सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा॥

Notes

- सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।

FEBRUARY MARCH APRIL

Scanned with CamScanner

(8) संदेह अलंकार – संदेह या शंका बनी रहती है।

लक्षण :-

सन्देह प्रकृतेऽन्यस्य संशय प्रतिभोत्थित:।
शुद्धो निश्चय गर्भोऽसौ निश्चयान्त इति त्रिधा।

पहचान – अथवा, वा, किंवा, आहोस्वित (अथवा)

उदाहरण :-

इदं कर्णोत्पलं चक्षुरिदं वेति विलासिनी
न निश्चिनोति हृदयं किन्तु दोलयते मन:

(9) भ्रान्तिमान अलंकार – मान लिया जाता है।

लक्षण –

साम्यादस्मिन् तद्बुद्धि भ्रान्तिमान प्रतिभोत्थित:

जहा उपमेय को उपमान या उपमान को उपमेय मान लिया जावे

उदाहरण –

पलाशमुकुल भ्रान्त्या शुकतुण्डे पतत्यलि:।
सोऽपि जम्बुकफलभ्रान्त्या, तमलिं धर्तुमिच्छति।

(10) निदर्शना अलंकार – उल्टा दर्शन
– अनु बिम्ब का अलंकार

लक्षण – असम्भवन् वस्तु संबंध उपमा परिकल्पक निदर्शना।
– असंभव वस्तु का सम्बन्ध संभव वस्तु के साथ (परिकल्पना) की जावे।

Notes

Scanned with CamScanner

उदाहरण - शुश्रुषस्व गुरून् कुरु, प्रिय सखी वृत्तिं सपत्नीजने:।

- क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् ॥

(11) दृष्टान्त अलंकार — विमलेश पूनियां

संभव को संभव के साथ असंभव को असंभव के साथ बतलाया जाता है।

लक्षण:- दृष्टान्तस्य सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यायाऽलङ्कृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः॥

(12) दीपक अलंकार :- अनेक कर्ताओं की एक क्रिया। अनेक क्रियाओं का एक कर्ता (जहाँ प्रस्तुत अप्रस्तुत में एक बात हो)

लक्षण - अप्रस्तुतप्रस्तुतयोः एक धर्माभि सम्बन्ध।

उदाहरण -

कृपणानां धनं नागानां फणमणिः केसराः सिंहानाम् (मणि, बाल)।
कुलबालिकानां तनाः कुतः स्पृश्यन्तेऽमृतानाम्।

धन, मणि, बाल शरीर सभी कारकों की एक क्रिया।

सम्मान परिग्रह बहुवल्लभाऽपि (बहुत भारि) द्वे प्रतिष्ठे कुलस्य मे ॥
समुद्रवसना चोर्वी सखी च युवयोरियम् ॥

अप्रस्तुत - पृथ्वी प्रस्तुत - शकुन्तला

Scanned with CamScanner

(13) तुल्ययोगिता –

प्रस्तुत को प्रस्तुत से अप्रस्तुत को अप्रस्तुत से समझाया जाता है।

लक्षण – पदार्थानां प्रस्तुतानामन्येषां वा यदि भवेत्।
एक धर्माभिसम्बन्धः स्यात् तदा तुल्ययोगिता॥

NOTE :- दीपक – प्रस्तुत को अप्रस्तुत से समझाना।
तुल्ययोगिता – प्रस्तुत को प्रस्तुत से समझाना।

उदाहरण :-

(1) पाण्डुक्षमं वदनं हृदयं सरसं तवालसं वपुः।
आवेदयति नितान्तं क्षेत्रिय रोगं सखि हृदयन्तः।

यहाँ सखी, वदन, हृदय, वपु (शरीर) सब सामने हैं अतः प्रकट का प्रकट से वर्णन किया गया है।

(2) शान्तानुकूल पवनः शिवश्च पंथाः।
शान्त व अनुकूल

अतिशयोक्ति अलंकार – अप्राकृतिक वर्णन
– मुखं द्वितीय चन्द्रः

लक्षण –

सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते।

जहाँ अध्यवसाय की सिद्धी की प्रतीति हो
– लोक सीमा का उल्लंघन

उदाहरण –

कथमुपरि कलापिनः कलापो विलसति तस्य तलेऽष्टमी–
न्दुखण्डम्।
कुवलययुगलं ततो विलोलं तिलकुसुमं तदधः–
प्रवालमस्मात्

→ कैसा आश्चर्य है ऊपर मयूर कलाप है, नीचे अष्टमी का चन्द्र विराजमान है, उसके नीचे दो चंचल नीलकमल हैं, झलक रहे हैं, इसके नीचे तील का फूल दिखाई दे रहा है, और उसके नीचे मूंगे का सौन्दर्य निखर रहा है।

→ ये सारी बातें चेहरे पर हो नहीं सकती –

Notes

Scanned with CamScanner

व्यतिरेक :-
उपमेय को उपमान से अधिक बताना।

लक्षण →
व्यतिरेको विशेषश्चेदुपमानोपमेययो:।
आधिक्यमुपमेयस्य उपमानान्न्यूनताऽथवा॥
= उपमान को उपमेय से उपमेय को उपमान अधिक दिखाया जावे।

उदाहरण :- ~~विमलेश~~ पूर्विया
दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणास्यां रवेरपि।
तस्यामेव रघो: पाण्ड्या: प्रतापं न विषेहिरे॥
- सूर्य जब दक्षिण में जाता है तो उसका प्रताप मंद पड़ जाता है, परन्तु उसी दक्षिण दिशा में पांड्य लोग रघु का प्रताप सहन नहीं कर सकते।
रघु को सूर्य से बढ़कर बताया गया है।

(14) स्वभावोक्ति अंलकार -
जहाँ वास्तविक वर्णन प्राकृतिक वर्णन जेल, कोमेन्ट्री, बच्चे की क्रिया, अभयारण्य वर्णन मेला, ग्रामीण, ~~शहरी~~ शहरी वर्णन,
लक्षण :-
स्वभावोक्तिर्दुरूहार्थ स्वक्रिया रूपवर्णनम्
कहना कठिन हो पर सामान्य रूप से कहा जा सके न
- जहाँ दुरुह वस्तुओं का यथावत स्वभाविक वर्णन हो
उदाहरण :- ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यदने दत्त दृष्टि: (रथ)
(बाण के डर से) पश्चार्धेन प्रविष्ट: शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
(आधे चबाये हुए) दर्भैरर्धावलीढै: श्रमविवृतमुखभ्रंशिभि: कीर्णवर्त्मा (रास्ता गंदा)
पश्योदग्रप्लुतत्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति॥
दुष्यन्त शिकार - देखो अपने पीछे दौड़ते हुए रथ पर बार-बार गरदन मोड़ने से मनोहरता पूर्वक एक दृष्टि वाला, बाण लगने के भय से अपने ~~शरीर~~ शरीर के पिछले आधे भाग से बहुत अधिक आगे के भाग में प्रविष्ट हुआ सा (दौड़ने से) थकावट के कारण खुले हुए गिरने वाले, आधे चबाये हुए कुशों से जिसका मार्ग व्याप्त हो गया है (ऐसा यह मृग) ऊँचा उछलने के कारण आकाश में अधिक भूमि पर बहुत कम चलता है।

Scanned with CamScanner